देशप्रेमी संन्यासी

संकलित

विचार-बोध :

स्वामी विवेकानन्द भारत माता के विरल सुपुत्र थे । उन्होंने अपनी प्रचंड प्रतिभा, गंभीर ज्ञान और असाधारण वाक्शक्ति द्वारा विदेशों में भारतीय दर्शन, वेद-वेदांत का महत्त्व प्रमाणित किया । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैंड के विद्वानों को समझा दिया कि हिंदू धर्म सहनशील और मानवीय है । उसमें संकीर्णता या कट्टरता नहीं है । उन्होंने देश के लोगों को भी जगाया, सेवा का कार्य किया । कराया भी । देश का नाम उजागर किया । वे संन्यासी थे । सदा के लिए नमस्य भी ।

स्वामीजी ने भारतीयों को सुखभोग त्यागकर सादा-सीधा जीवन बीताने को कहा । सदा कर्म-तत्पर रहने, निराशा और आलस्य को छोड़ने को उत्साहित किया । सदैव जाग्रत रहने के लिए अपने भाषण में आह्वान किया था । भारत हमारा सिरमौर है । इसे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए । स्वामीजी ने अमेरीका और इंग्लैंण्ड जैसे समृद्धिशाली देशों में जाकर भारतीय ज्ञान का, दार्शनिक विचारों का अपने वक्तव्य के जरिये प्रचार-प्रसार किया ।

रामकृष्ण परमहंस के वे उपयुक्त शिष्य थे । आज देश भर में तथा विदेशों में इनकी अनेक संस्थाएँ भारतीय संस्कृति और दर्शन के प्रचार-प्रसार में लगी हैं । देश-विदेश में भारत के नाम को रोशन करने वाला संन्यासी और कोई नहीं स्वामी विवेकानंद ही हैं जिनका स्मरण आज देश-विदेशों में लोग कर रहे हैं ।

देशप्रेमी संन्यासी

हम देखते हैं कि कुछ लोग धन कमाने में जुटे रहते हैं । कुछ लोग सुख भोगने को व्याकुल रहते हैं । कुछ ऐसे हैं जिनको संन्यासी कहते हैं । वे लोग अपनी इच्छा से घरबार छोड़ देते हैं । सुख के साधनों का त्याग कर देते हैं । गरीबी में जीते हैं । संसार को माया का जंजाल समझते हैं । पर आश्चर्य है कि ऐसे लोगों में कुछ अपनी मातृभूमि

से बेहद प्यार करते हैं । एक ऐसे संन्यासी थे स्वामी विवेकानन्द । देखने में बहुत सुन्दर । बड़े ज्ञानी और पंडित । सरल, विनयी और मिष्टभाषी । लेकिन प्रचण्ड प्रतिभाशाली ।

सालों पहले की बात है । भारत पराधीन था । यहाँ अंग्रेजों का शासन चलता था । 1857 में लोग एक बार कोशिश करके पराजित हो गए थे । निराशा, आलस्य और कर्महीनता में डुबे हुए थे । ऐसे समय स्वामीजी ने अपने देशवासियों को ललकारा–

''मेरे प्यारे देशवासियों ! उठो, जागो । जीवन का वरदान स्वतन्त्रता है । उसे प्राप्त करो । गर्व से कहो कि मैं भारतीय हूँ ! हर भारतीय मेरा भाई है । भारत मेरा जीवन है, मेरा प्राण है । भारत के देवता मेरा भरणपोषण करते हैं । भारत मेरे बचपन का हिंडोला है, मेरे यौवन का आनन्द लोक है और मेरे बुढ़ापे का बैकुंठ है ।''

एक बार स्वामीजी अमेरीका गए । वहाँ बड़ी धर्मसभा हो रही थी । उन्होंने बड़ी मर्मस्पर्शी वाणी में भारत के धर्म, आचार-विचार, ऋषि-मुनियों के चिंतन, आध्यात्मिक दृष्टिकोण का महत्व प्रतिपादित किया । अपने सुंदर, सरल, अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषण द्वारा स्वामीजी ने सबके दिलों को अभिभूत कर दिया ।

स्वामीजी एक साल इंग्लैंण्ड में रहे । वहाँ भारत के मालिक अंग्रेज विद्वानों को अपनी विद्वत्ता से प्रभावित किया । वे भी मान गए कि भारत में गरीबी भले ही हो, लेकिन वह ऊँचे विचारों और चिंतन के धनी है, अगुवा है ।

स्वामीजी ने अपने असंख्य अनुयायियों को मानव-सेवा, ज्ञान तथा धर्म-प्रचार में लगाया । रामकृष्ण परमहंस उनके गुरु थे । उन्हीं के नाम से रामकृष्ण मिशन बनाया । आज भी देश-विदेश में उनकी अनेक संस्थाएँ जनता की सेवा में डटी हुई हैं ।

देश-विदेशों में भारत के नाम को रोशन करनेवाला स्वामी जी जैसा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता । देश को आजाद करने में, उसे सदा जाग्रत रखने में ऐसे संन्यासियों का बड़ा योगदान रहा ।

●

शब्दार्थ और टिप्पणी :

मिष्टभाषी – मधुरभाषी । जंजाल – झंझट । बैकुण्ठ – स्वर्ग । भरणपोषण – अन्नवस्त्र देना । अभिभूत – मोहित, द्रवित । संन्यासी – गृह त्यागी साधु ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) हम संन्यासी किसे कहते हैं ?

(ख) विवेकानंद का व्यक्तित्व कैसा था ?

(ग) विवेकानंद ने देशवासियों को क्या कहकर ललकारा ?

(घ) अमेरीका की धर्मसभा में स्वामीजी ने अपने भाषण में किस बात को प्रतिपादित किया ?

(ङ) स्वामीजी ने इंग्लैण्ड के लोगों को कैसे प्रभावित किया ?

(च) स्वामीजी ने अपनी अनुयायियों को किन-किन कामों में लगाया ?

(छ) 1857 के बाद हमारे देश के लोग किस स्थिति में थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(क) भारत कब पराधीन था ?

(ख) जीवन का वरदान क्या है ?

(ग) अंग्रेज क्या मान गये ?

(घ) देश को आजाद करने में किनका योगदान रहा ?

(ङ) कौन रामकृष्ण परमहंस के उपयुक्त शिष्य थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :

(क) धर्म सभा कहाँ हो रही थी ?

(ख) देशप्रेमी सन्यासी कौन हैं ?

(ग) स्वामीजी इंलैण्ड में कबतक रहे ?

(घ) स्वामीजी के अनुसार हमारा भरण पोषण कौन करता है ?

(ङ) स्वामीजी के गुरु कौन थे ?

(च) सालों पहले भारत में किसका शासन चलता था ?

(छ) स्वामीजी बूढ़ापे का बैकुण्ठ किसे मानते हैं ?

(ज) स्वामीजी के बचपन का हिण्डोला कौन था ?

(झ) प्रत्येक भारतीय स्वामीजी के लिए क्या था ?

(ञ) स्वामीजी ने किसे जीवन का बरदान समझा ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

वाणी, विद्वान, अंग्रेजी, दृष्टिकोण, आजादी, देश, सन्यासी, गरीबी, निराशा, आनन्द, बूढ़ापा

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

विद्वान, आजाद, साल, मानव, व्याकुल, इच्छा

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) सालों पहले का बात है ।

(ख) रामकृष्ण परमहंस विवेकानंद का गुरु थे ।

(ग) देश में रामकृष्ण मिशन का अनेक संस्थाएँ हैं ।

(घ) गर्व में कहो की मैं भारतीय हूँ ।

(ङ) भारत मेरी जीवन है ।

4. निम्नलिखित में से विशेषण पद छाँटकर लिखिए :

(क) मेरे प्यारे देश वासियों !

(ख) यहाँ अंग्रेजों का कड़ा शासन चलता था ।

(ग) भारत मेरे बचपन का हिंडोला है ।

(घ) मेरे यौवन का आनंद लोक है ।

(ङ) भारत मेरे बचपन का बैकुण्ठ है ।

5. निम्नलिखित वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए :–

(क) मेरे प्यारे देशवासियों उठो जागो ।

(ख) निराशा आलस्य और कर्म हीनता में डुबे हुए थे

(ग) उनकी सुन्दर सरल अर्थपूर्ण अंग्रेजी भाषाण ने सब के दिलों को अभिभूत कर दिया

(घ) स्वामीजी ने असंख्य अनुयायियों को मानव सेवा ज्ञान तथा धर्म प्रचार में लगाया

अभ्यास-कार्य

(i) ऐसे कुछ अन्य महापुरुषों की जीवनी पढ़कर उनके व्यक्तित्व और कृत्तित्व के बारे में जानिए ।

(ii) इस विषय को कमसे कम दो बार पढ़िए ।

■■■

गिल्लू

महादेवी वर्मा

लेखिका का परिचय :

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में सन् 1907 को हुआ । उनकी माता हेमरानी और पिता गोविन्दप्रसाद वर्मा– दोनों कुलीन और धनी परिवार के थे । महादेवी का बचपन सुख-चैन से बीता ।

महादेवी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. पास किया; फिर वे प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रिंसिपल बन गयीं । उन्होंने हजारों लड़कियों को पढ़ाया, नारी-शिक्षा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा ।

महादेवीजी विदुषी, जागरूक और सहानुभूतिशील थीं । उनके पास तेज बुद्धि थी और कोमल हृदय था । उन्होंने जीवन और जगत को निकट से देखा । केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु जीव-जन्तुओं तक के सुख-दु:ख को उन्होंने पहचाना, अनुभव किया; समाज में फैले अनाचार, अत्याचार और विषमता का अनुभव किया; लोगों की आशा-आकांक्षा, इच्छा-अभिलाषा, पीड़ा-वेदना को समझा । उनको सरल भाव-पूर्ण भाषा में व्यक्त किया । ऐसा सजीव वर्णन किया कि पढ़ने से आँखों के सामने चित्र उभर आते हैं ।

महादेवी ने नारी के महत्त्व को समझा, उसके त्याग और बलिदान से प्रेरणा ली । उन्होंने नारी के स्नेह-प्रेम, त्याग-ममता, दु:ख-दर्द और क्षमताओं की बेजोड़ छवियाँ आँकीं । नारी को उन्होंने दीपशिखा कहा, जो खुद जलकर सबको आलोक प्रदान करती है । वह नीरभरी दु:ख की बदली है । बदली खुद दु:ख सहकर करुणा से विगलित हो, धरती पर जल बरसाकर उसे सुख, शान्ति, शीतलता से भर देती है; जीवन को हरा-भरा कर देती है । उसी तरह नारी भी दु:ख सहकर सबको आनंद देती है । महादेवी प्यार और पीड़ा की लेखिका हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने मानव की पीड़ा, वेदना, विवशता और शक्ति-सामर्थ्य का वर्णन किया । इसलिए उनके काव्य अत्यन्त तरल और मार्मिक बन गये । वे छायावाद युग की प्रख्यात कवयित्री हो गयीं ।

महादेवी की रचनाओं में विचार हैं तो भाव भी हैं; कल्पना है तो चित्र भी है; सजीवता है, सूक्ष्मता है, करुणा है, शक्ति का संदेश भी है । इसलिए महादेवी कविता तथा गद्य– दोनों

में सिद्धहस्त हैं; अत: उनकी रचनाएँ पाठक के मर्म को छू लेती हैं । महादेवी जी ने ईश्वर की चेतना, मानव-मन की कोमलता, स्नेह-प्रेम, करुणा-वेदना को अपनी गद्य-रचनाओं में भी उजागर किया । विचारों के साथ कोमल भावनाओं को पिरोया; सूक्ष्म निरीक्षण किया । उनकी गद्य-रचनाएँ पाठक की आँखों के सामने चित्र खड़े कर देती हैं । उन्होंने साफ-सुथरी, संस्कृत शब्दों से भरी सुन्दर भाषा का प्रयोग किया ।

महादेवी की कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं –

काव्य : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा ।

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ ।

संस्मरण : पथ के साथी ।

निबंध तथा भूमिकाएँ – श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, क्षणदा और संकल्पिता ।

उन्होंने 'चाँद' पत्रिका की संपादना की । उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक, पद्म भूषण तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

विचार-बोध :

प्रस्तुत निबंध 'गिल्लू' महादेवी का एक संस्मरण है । उनकी स्मरण-शक्ति इतनी प्रखर है कि बीती घटनाओं के पूरे ब्योरेवर वर्णन- वे अत्यन्त सहृदयता से व्यक्त करती हैं । प्राणि-मात्र के प्रति महादेवी के मन में गहरी सहानुभूति थी । अत: उनकी रचनाओं में प्रेम, पीड़ा, विश्व-वेदना और करुणा की सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति पायी जाती है । इस निबंध में एक गिलहरी जैसे छोटे जीव की जीवन शैली का वर्णन करते हुए महादेवी ने प्राणि-मात्र के प्रति अपने प्रेम, करुणा तथा हृदय की संवेदनशीलता से पाठकों को सराबोर कर दिया है ।

महादेवी की भाषा अत्यन्त सरल, सजीव होने के साथ-साथ चित्र और प्रतीकों से पूर्ण होने के कारण सीधे असर करती है । बीच-बीच में संस्कृत के दो-एक शब्द मोतियों की भांति चमकते और भावों को जगमगा देते हैं । इसलिए ऐसे लेखों को बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है । इनमें कहानी का-सा मजा आता है ।